

श्रीगणेशायनमः लमः श्रीसरस्वत्यैनमः हरेदुरितनाशनप्रकटपूतनामर्दन
प्रभो नरकभञ्जनहृजवधूसुगौरभञ्जनभने कलुरसुंदरि मरा कृष्ण गोपीपते स
उद्धरदयानिधेः पतिनामाश्रयः स्वार्थके १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

आशा भद्र काथ

3642

ASHA BHADRA

स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ पाशमैवारय सरलधिजे ॥ अवजद मंत्र ॥ उँ विवातासह
 देवलहेयाइमंत्रम्वेकरेविलिविलासमहानिशामंमिगुहामंदिरसहा ॥ सातवारपाशमं
 तरिएवारतनपासाठालिये ॥ जो असस्योवैताकेविवारलिजियो ॥ डाडाडा ॥ सुनहुप
 छकजेतुचितवतेहेतोवातवहुतसंतोषहोइगो ॥ संदेहमतमेजनराघोतेहिकार्यसिद्धिहोइ
 गोसंदेहनाहि ॥ २ ॥ डाडाडा ॥ सुनहुप छकजेतुमचितवतेहेतामहुमाघासमानहे ॥ जाहाजो
 इगोवहुतपहिगो ॥ ३ ॥ अवजद ॥ सुनहुप छकतेरोकार्यजोगनमानहेवहुतकार्यनहोइगोजोम
 लाजानहितोयेछाडिओखातसहिहोइगिसंदेहनाहि ॥ ४ ॥ अवद ॥ सुनहुप छकतेरोकार्यव
 हुतदिनपाइसिद्धिहोइगोतुअपनेदेवताकिपूजाकरितातेसिद्धिपाइ ॥ गौवाहरागइठजनि राम

करतेतेसंकुलदेवताकिअटकेहेताकेपुपुजाअवस्यकरिपाइतेरोभलोहोइगो ॥ ५ ॥ अवद
 सुनहुप छकतेकोलक्ष्मीकिप्राप्तिहोइगोसोजनवाधवअनंदउपजेगोतेरोशत्रुक्षयजा
 इगोताहापाइतेरोकार्यसिद्धिपावेगो ॥ ६ ॥ अवअ ॥ सुनहुप छकतेरोकार्यअतिकठि
 नहेजिनसौतुमवातवातकरताहोशोइतेरोशत्रुतुमसावधानहोनव्यहकिपूजाकरिताह
 पासेसिद्धिपावेगो ॥ ७ ॥ अवजव ॥ सुनहुप छकतेरोकार्यकठिनहेतोकोउत्पातलाइगोतुवहु
 तउपादियेएकचित्तहोइकेइअसेवाकरितेरोभलोमाहोदेवकरेगो ॥ ८ ॥ अवदअ ॥ सुनहु
 प छकतेरोचिंतासुभहेतोकेअर्थलाभहोइगोवहुतब्रह्माजनिकरोब्राह्मनकोकोमोजनदि
 जेवैगोमिद्धिपाइगो ॥ ९ ॥ अवअव ॥ सुनहुप छकतेरोकार्यतेरोवहुतहितवहेतुअशुभ
 कार्यचिंताजनिकरोअपनरक्षाकरिविरानेवचनतोउद्यमजनिकरोतुरंतइअरकिपु

जाकरि ब्राह्मण भोजन देते रोभा गप्प सिद्धि होइगो ॥ १० ॥ **आदर** ॥ सुनहु पछु कते तुमि तउ ते हे ते
 री चिंता बहुत करि पर कि हेरु कार्य कपो से वरदु अकु ला तो हे ते रो भलो होइगो ॥ ११ ॥ **आज** ॥ सुनहु पछु कते रो चित्त पहिले सोना हितु अकु लाव तो हे तुम धर्म करो तव सिद्धि
 होइगो ॥ १२ ॥ **अज** ॥ सुनहु पछु कते रो कार्य सिद्धि पाइगो तुम धीर्य धरा अकु तो तुम तिते रो तु
 रा दीन गयो छे रो महा देव भलो करे गो इश्वर को दी पदान करि आनंद होइगो संदेह नहि ॥ १३ ॥
अव ॥ सुनहु पछु कते को अर्थ लाभ होइगो रो अर्थ पावहि गो ते रो वैरि को दृष्ट भाव देखे गो
 तिनि को तु डरये जा नित रो कह करे गो ते रो महा देव भलो करे गो ॥ १४ ॥ **अज** ॥ सुनहु पछु क
 ते रो कार्य सखा विना न होइगो ॥ १५ ॥ **अज** ॥ सुनहु पछु कते रो चिंता कठिन है जो हठ जैसे अ
 सुवार घोरा विना जुके न सके ते से ये हु कार्य सखा विना न होइगो ॥ १५ ॥ **अज** ॥ सुनहु पछु क

राम
 २

ते री चिंता कठिन है जो हठ करे गो तो बहुत से विरोध पड़े गो तु नवग्रह कि पूजा करी ते रो कार्य पावे
 भायी वंध से ति भय हे तुम तिते चिंता ज निकरो ॥ १६ ॥ **अव** ॥ सुनहु पछु कते रो सिद्धि होइगो सुख
 पावहि गो तु इश्वर कि पूजा करि ते रो स अक्षय जाइगो ते रो महा देव भलो करे गो संदेह नहि
 ॥ १७ ॥ **वव** ॥ सुनहु पछु कते रो कार्य वेगि होइगो तु ब्रह्मा महा देव कि सेवा करि देवता के प्र
 साद भलो होइगो चिंता ज निकर ॥ १८ ॥ **वव** ॥ सुनहु पछु कते को या कार्य सिद्धि होइगो
 ते रो दोउ सत्रे हे सो इते रो मित्र होइगो तु काहु मति पतियावहु ते रो महा देव भलो करे गो ॥ १९ ॥
वव ॥ सुनहु पछु कते तु गमन कियो चाहत है वलियत है सो भली रहि है तो भलितो को दोउ
 वात सिद्धि है इश्वर को दी पदान नगाइ ते रो भलो होइगो ॥ २० ॥ **वद** ॥ सुनहु पछु कते तु अ
 पनु कार्य चितवतो हे सो न होइगो जैसे राघव को जोषध न लागे ते से ये हु कार्य हेतु नवग्रह

॥३॥
 कि पूजा करिता ते संतोष होइगो ॥२१॥ वज्र ॥ सुनहु पछ कतु मन की बं बला ता छाडि देर कविं त
 रहि विना कारण वित्त जनिके रेतो कौ सजता ॥ २२॥ वज्र ॥ सुनहु पछ कतु तेरे सुमित्र होइगो त
 व को रीसिद्ध होइगो विष्णु को दिपदान करि जगदि से तेरो भलो करेगो ॥२३॥ वज्र ॥ सुनहु पछ कतु तेरे
 विंता बहुत पर कि हे सो कार्य न होइगो यो मन स्थिर राखि गो तो बहुत सखा मिलि सिद्धि पावहि गो
 तुमि इच्छा कि सेवा करे आनंद होइगो ॥२४॥ वज्र ॥ सुनहु पछ कतु तेरा बांधव तो कौ बुरा चितवतो हे
 सो सत्पावहि गो सोहि दुख देखि गो तुम विंता जनिके रेतो सुधर्म पुरणार्थ करि मा हो देव नि को क
 रे गो ॥२५॥ वज्र ॥ सुनहु पछ कतु मध्य को ता शिवितवतो हे ता हागयेता कौ अर्थ लाभ होइगो कछु सरि
 रोग होइगो पुन्यार्थ प्राप्त न को मन इक्षा भोजन देखे आनंद होइगो ॥२६॥ वज्र ॥ सुनहु पछ कतु तेरो कार्य
 अति कठिन है तुम येहु कार्य की उद्दिम छाडि अपने सावाधान करि काहु को जनि पति याहि गो तु इच्छा

राम
३

॥ वज्र ॥

र कि सेवा करि सिद्धि पावहि गो ॥२७॥ वज्र ॥ सुनहु पछ कतु तेरा विंता बहुत है सो तुम कौ फल प्राप्ति होइगो
 ॥२८॥ वज्र ॥ सुनहु पछ कतु तेरी कार्य सिद्धि होइगो कछु केश होइगो ते तेरो पाँवों बांधव से ते निवरे गो
 मा हो देव प्रसाद भलो होइगो ॥२९॥ वज्र ॥ सुनहु पछ कतु तेरो कार्य की बहुत सत्र है तेज सौं र को कार्य न
 होइगो तुम हट न करे गो हट करे गो तो बहुत विरोध उपजे गो तुम महा देव कि सेवा करि ता भद्र संतोष होइगो
 ॥३०॥ वज्र ॥ सुनहु पछ कतु तेरो कार्य कठिन है तुम धर्म पुन्य करि सिद्धि पावहि गो ॥३१॥ वज्र ॥ सुनहु पछ कतु तेरो का
 र्य कठिन है ते से लोह कितावे ठिय ले पारगयो चाहि सक भउ गयो न जाइ ते से तेरो कार्य जे से चरजीव पा
 ति सो षहर जीवै न सके ते से तेरो कार्य है तुम करो पुरण ताते अवान हि मै पावहि गो ॥३२॥ वज्र ॥ सुनहु
 पछ कतु तेरो कार्य विगिन होइगो तुम चित्त स्थिर करि गमन जनिके रेतो हा कार्य छाडि गो र प्रारंभ ता
 कि सिद्धि पावहि गो ॥३३॥ वज्र ॥ सुनहु पछ कतु तेरी अर्थ लाभ होइ तेरो पुरातन को उदय आयो
 होता ते सिद्धि वस्तु पावहि गो ॥३४॥ वज्र ॥ सुनहु पछ कतु तेरो कार्य सहज होइगो जे सा मिज

कोचंद्रमाब्राह्मदिनवाँडेतेरोकार्यसिद्धिपावहिगो॥३४॥**जजद** सुनहुएछकतुइश्वरकासेवाकरिजेतेजोरभयराजभयवितदेरेगकार्यपुणपतेसिद्धिपावहिगो॥३५॥**जदव** सुनहुएछकतेरोकार्यकेवहुतरात्रुहेताकोवृहन्विद्यासजनिकरेतुमहादेवकैसेवाकरिकेसुखमनकरीतातेसुखपाहिगो॥३६॥**जदव** सुनहुएछकतेरोकार्यसहजहोइगोतुमइश्वरीपुजाकरितातेसबउपद्रवभाजेगोतातेआनंदहोइगो॥३७॥**जवद** सुनहुएछकतेरोकार्यकठिनहतेरोयिकसत्रुहेमुहपरभलोकोलतहेसोपिठपाँडेवुरोवातकोलतहेसोतेरोकरकिरेगोतुइश्वरीसेवाकरीदेवताकोप्रसादहोइगो॥३८॥**जवव** सुनहुएछकतेरोदिनपैलस्वहृतकठिनहैअवदिनकरुतभलोआयोतेतेसुखकार्यपावहिगो॥३९॥**जदज** सुनहुएछकयाकार्यकितेकोसिद्धिहोवोतेरेजिवमेवहुतसंदेहहैसत्रुपनिनाहितुब्रह्मइश्वरकैसेवाकरिसर्वविंताएलहिगो॥४०॥**जजद** सुनहुएछकओरकीआस्पचितवतेहैसोसाहिदुरिदेवगुरुकैसेवाकरीतातेकार्यसिद्धिपावहिगो॥४१॥**जवज** सुनहुए

राम
॥४॥

छकतेरोकार्यकोवहुतविग्रहहेतातेकार्यउत्ताउलनहोइगोहठकरधियोत्योवहुतसेविरोधहोइगोतुधर्मकरीपुणपतेसिद्धिपावहिगो॥४२॥**जजद** सुनहुएछककार्यआसचेहेतातेआनंदनाहिलेकमानुषपुणपतहियोकार्यकियोवहुतहैवहुवेरउपजेगोरकार्यछाडिधर्मकरीतातेसिद्धिपावहिगो॥४३॥**जजअ** सुनहुएछकतुब्रह्मअर्थलाभवितवतेहैतुब्रह्मपावहिगोपहिलप्याकाररावकियोथोपरिभलोहोइगोजवसहजहिसुखपावहिगो॥४४॥**जदअ** सुनहुएछकतेरोकार्यविषमहेतुब्रह्मबलोवाहतहेपुणकरपुरुषकेआगेचलननपावहिगो॥४५॥**जजव** सुनहुएछकतेलदपकोवातिसमानहैजवराइतेलहोइतवताइदिपकजलेतैसोतेरोकार्यहोइछीआगेभलोकोलेसोइपिठपाँडेभलोतकोलेतुब्रह्मपुणपकरीमहादेवभलोकरेगो॥४६॥**जजज** सुनहुएछकतेरोकार्यकठिनहैसत्रुतोवुरोचितवतेहैतुब्रह्मग्रहकिपूजाकरीतातेभलोहोइगो॥४७॥**जवज** सुनहुएछकतेरोकार्यसमनेदेखियेछनमनाहिसोकार्यबहुतकठिनभोलहिगोपीतुब्रह्मधनधान्य

वाहन हो तो इष्ट देवता कि पूजा करी ताते आनंद होइ ॥ ४८ ॥ **जज** सुनहु पछु कते रो कार्य खरोक
 दिन हे असम भो हे परितु उदिम करि बहुत दिन पाछे कार्य सिद्धि पावेगो ॥ कोकाहु क दोष हे सत्र
 पाल कि पूजा करि ताते सिद्धि पावहिगो ॥ ४९ ॥ **दद** सुनहु पछु कते रो कार्य उदिम करिय के लोका
 र्य न होइ गो सखा ते कार्य होइ गो आनंद होइ गो ॥ ५० ॥ **दजद** सुनहु पछु कतु मगम कि यो वाह
 तो है ता हा गये अत्य लाभ होइ गो पुत्र परिवारो संतोष होइ गो कछु ले पा होइ गो तु डरवो जनि तुखा
 हरा भोजन करि ताते सुष संतोष होइ गो ॥ ५१ ॥ **ददज** सुनहु पछु कते रो कार्य ते रो कार्य कठिने हे न
 काम बहु सो विरोध होइ गो ये कार्य छाडि और बात की सिद्धि होइ गो ॥ ५२ ॥ **जव व** सुनहु पछु क
 कार्य दुरि हे पुन्य ते कार्य सिद्धि पावहिगो जैसे गयो दीप फिरि वाति जागे ते ते रो कार्य हेतु इष्ट
 र कि सेवा करी ताते आनंद होइ गो ॥ ५३ ॥ **दज** सुनहु पछु क कार्य को प्रपु पुनि हे सो करि

राम
 ॥ ५३ ॥

न कतु हे ना उपर जो धज नि करि ते रो भाग्य उदय भयो हे ताते सिद्धि पावहिगो ॥ ५४ ॥ **दद** सुनहु पछु
 कते रो कार्य पुण्य उदय भयो हे ताते सखामाय करोगे ते रो भलो होइ गो संदेह नाहि ॥ ५५ ॥ **दद**
 सुनहु पछु कते रो कार्य समुद्र प्रमाने हे दुख रहेतु हां छाज नि करी सिद्धि न पावहिगो ते रो शत्रु ते कार्य
 सिद्धि न होइ गो तु धिय धरि उता डलो जनि करे म हो देव भलो करे गो ॥ ५६ ॥ **दजव** सुनहु पछु कतु सब
 बात किंच चलता छाडि एक मनुष्य ते कार्य न होइ गो तु मा हाये कि पूजा करि ते रो भलो होइ गो ॥ ५७ ॥
दवज सुनहु पछु कतु वसंग वांधव सै भलो वासा होइ गो तु धन धान्य पावेगो ते रो भलो होइ गो ॥ ५८ ॥
दथज सुनहु पछु कते रो कार्य कठिने हेतु डरो जतन करि देव कि गति जानि इश्वर की सेवा करी ताते
 सिद्धि पाइ गो ॥ ५९ ॥ **दवद** सुनहु पछु कते रो कार्य कठिने हेतु डरो जतन करि देव कि गति जानि इश्वर की सेवा करी ताते
 सिद्धि पाइ गो ॥ ६० ॥ **दजज** सुनहु पछु कते रो कार्य सुभ हे लाभ बहुत होइ गो तु धर्म करि ताते सिद्धि पावेगो

॥ ६३ ॥ सुनहु एह कहतेरो कार्य बहुत पाहे सिद्धि पावैगे तो कों फल प्राप्ति होइगे **॥ ६४ ॥** सुनहु एह कहतेरो कार्य बहुत पाप पावैइ व्यजाइगे तुइ श्वर की सेवा करी पुरा पते सुख पावैगे **॥ ६५ ॥** सुनहु एह कहतेरो को अर्थ लाभ होइगे तुका हु कों उरये जनिम धिरो राधि तेरो दिन सु
 वहे ताते आनंद होइगे **॥ ६६ ॥** सुनहु एह कहतेरो कार्य को बहुत शत्रु है परिते नाहि जान
 येतु धिक् धिरो राधि पहिले तो कों बहुत बुरा इमइ है अव बहुत भलो दिन आयो है ताते आ
 नंद होइगे **॥ ६७ ॥** इति गगन मुनि कृतं पासा कलि समाप्तं सुभं भवतु सुभं भवतु ॥

जं शं व
 ० द ०